दो विश्वयुद्धों के बीच जापानी सैन्यवाद

1914-1922 की सक्रिय अवधि के बाद जापानी साम्राज्यवाद शांत सा हो गया था लेकिन शीघ्र ही वह फिर से साम्राज्यवाद की राह पर चल पड़ा। फरवरी 1917 में जापान और ब्रिटेन के बीच एक गुप्त संधि हुई। जापान ने चीन से आश्वासन प्राप्त कर लिया कि वह प्रथम विश्व युद्ध के बाद शांतुंग प्रदेश तथा प्रशांत महासागर में स्थित द्वीपों पर जापानी अधिकारों का समर्थन करेगा। इस प्रकार प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् जापान पूर्वी एशिया की राजनीति में एक कदम और बढ़ गया।

1920 से 1930 की अवधि तक जापान शांत रहा लेकिन 1930 से जापान की नीति में एक नया मोड़ आया और जापानी साम्राज्यवाद का दूसरा चरण आरंभ हो गया। इस जापानी सैन्यवाद का आधार उसका विकृत राष्ट्रवादी तत्व था। जापानी पूँजीपति वर्ग सैन्यवाद का प्रबल समर्थक था।

इस बार जापान ने अपना लक्ष्य मंचूरिया को बनाया। आर्थिक कारण इसके प्रेरक तत्व थे। मंचूरिया का विस्तृत बाजार जापानी आकर्षण का केन्द्र था। मंचूरिया में कोयला, लोहा, सोना, सोयाबीन, धान आदि प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। ये सभी वस्तुयें जापानी उद्योग के लिये काफी महत्वपूर्ण थे। साथ ही वहाँ जापानी लोगों को बसाकर बढ़ती आबादी की समस्या से निजात पाया जा सकता था। इस वातावरण में चीन और जापान का आपसी सम्बन्ध निरंतर बिगड़ता जा रहा था। इसके साथ ही कुछ ऐसी तत्कालीन घटनायें घटित हुई जिसने स्थिति को और बिगाड़ दिया। अक्टूबर 1931 में जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण कर दिया और उसपर कब्जा कर लिया। इस घटना की प्रतिक्रिया सारे विश्व में हुई।

राष्ट्रसंघ ने इस जापानी आक्रमण की कड़ी निंदा की और प्रस्ताव द्वारा जापान को मंचूरिया छोड़ने के लिये कहा गया लेकिन जापान पर इसका कोई असर

नहीं हुआ। चीन में प्रचार के लिये जापान मंचूरिया में नियंत्रण बढ़ाता गया। राष्ट्रसंघ में केवल तर्क-वितर्क होता रहा और समस्या सुलझाने में राष्ट्रसंघ असफल रहा। इतना ही नहीं आगे चलकर जापान राष्ट्रसंघ से भी अपना नाता तोड़ लिया।

जापान ने मंगोलिया में भी पैर फैलाना शुरू किया और इसके लिये 1933 ई. में उसने चीन पर आक्रमण कर दिया। अब इटली एवं जर्मन साम्यवाद की तरह जापानी साम्यवाद भी विश्व के लिये शंका का कारण गया। यद्यपि विश्वजनमत इस घटना की निंदा की लेकिन जापान इसकी परवाह किये बिना आगे बढ़ता रहा और जापानी सेनाओं ने चीन को निष्ठुरता से दमन किया।

आगे 1934 से 1937 के बीच जापानी साम्यवाद की प्रगति में ठहराव की स्थिति रही। लेकिन इस दौरान इसने मंचूरिया में अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाता रहा। जापान नये रेलपथों का निर्माण करता रहा, विकास के लिये धन उड़ेलता रहा तथा जापानी आप्रवासियों को नये बसाता रहा। 1936-37 में जापान और इटली ने सोवियत रूस के विरुद्ध एक कॉमिण्टर्न विरोधी समझौते पर हस्ताक्षर किया। इसके शीघ्र बाद जापान ने चीन के खिलाफ निर्लज्जतापूर्वक साम्य कार्यवाही शुरू कर दी जिसका उद्देश्य चीन में प्रभुता और विजय हासिल करना था। उसने उत्तरी चीनी प्रांतों के अधिकांश भू-भाग पर अपना आधिपत्य जमा लिया। उसने कोरिया से लेकर हिन्द चीन तक के चीनी तट के प्रमुख बंदरगाहों को अपने कब्जे में ले लिया। उसने चीन की गणतांत्रिक सरकार को यांगत्सी नदी के पश्चिम पार भगा दिया।

1941 ई. में पूर्वी एशिया पर जापानी आधिपत्य की संभावनायें उतनी प्रबल थी जितनी यूरोप पर जर्मन आधिपत्य की। जापान 1938 में पारसल द्वीपों और 1939 में स्पेनिश और स्प्राटली द्वीप समूहों पर कब्जा कर चुका था। दिसम्बर

१९५१ ई में जापान उस समय अमेरिका के साथ युद्ध में कूद पड़ा जब जापानी, जल, स्थल एवं वायु सेनाओं ने पर्ल हर्बर में अमेरिकी नौसेना बेड़े को डूबो दिया और प्रमुख अमेरिकी हवाई ठिकानों को नष्ट कर दिया। यह घटना इतिहास में पर्ल हर्बर का विद्युत प्रहार के नाम से जानी जाती है। पर्ल हार्बर हवाई द्वीप समूह में अमेरिका नौशक्ति का प्रमुख केन्द्र था। जापान ने दक्षिण-पूर्व एशिया पर अपना आधिपत्य कायम कर लिया और जनवरी १९४२ में उसने मनीला पर अधिकार कर लिया। इसी वर्ष के मध्य से जापान को अमेरिका से टकराने के लिये तैयार हो जाना पड़ा एवं जापान तथा अमेरिका एक दूसरे के विरुद्ध द्वितीय महायुद्ध में कूद पड़े। जापान के साथ अमेरिका का संघर्ष वर्षों तक चलता रहा। विश्व की महानतम नौसैनिक शक्तियों पर विजय प्राप्त कर जापान को एक प्रकार से विश्वास हो गया था कि वह मनचाहे प्रदेशों पर प्रभुत्व स्थापित करने में सफल हो जायेगा। उसने अपने इस विश्वास को धरातल पर भी सिद्ध किया और जून १९४२ तक उसने हांगकांग, सिंगापुर, मलाया-प्रायद्वीप, बर्मा पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार जापान द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान लगभग संपूर्ण दक्षिण पूर्वी एशियाई भू-भाग पर अपना प्रभाव स्थापित करने में सफल रहा। वस्तुतः यह उसके साम्राज्यवाद की चरम स्थिति थी।

निश्चय ही विश्व युद्धों के बीच के वर्षों में जापान में उग्र साम्राज्यवाद के विकास ने संपूर्ण विश्व को झकझोर दिया। जापानी साम्राज्यवाद ने राष्ट्रसंघ को निष्क्रिय बनाने में मुख्य भूमिका निभायी। छोटे राष्ट्रों का राष्ट्रसंघ पर से विश्वास उठता चला गया। इसी दौरान यूरोप में सर्वसत्तावादी शक्तियों का विकास हो रहा था। जर्मनी में नाजीवाद एवं इटली में फासीवाद के विकास में एवं विस्तार में जापानी साम्राज्यवाद ने मदद पहुँचायी। इसी साम्राज्यवादी नीतियों के तहत बाद में रोम-बर्लिन-टोकियो धुरी की भी नींव डाली गयी। ऐसी गतिविधियों से

मित्र राष्ट्र चिंतित हुये और उनमें एकजुटता का प्रसार हुआ। ब्रिटेन, फ्रांस रूस, अमेरिका आदि ने इन सैनिक शासकों को पराजित करने का प्रयास किया और अंततः सर्वसत्तावादी शक्तियों को पराजित करने में सफलता भी पायी। अमेरिका द्वारा जापान के दो शहरों नागासाकी एवं हिरोशिमा पर गिराये गये परमाणु बमों से जापानी सैन्यवाद की महत्वाकांक्षाओं का अंत हुआ।

-o-